॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे देव! हे सखा! हे मित्र! तू इस संसाररूपी राष्ट्र का स्वामी है। इस राष्ट्र को शान्तिदायक, महान और ऊँचा बना। विधाता! यही नहीं हम संसाररूपी राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं। हम सबसे पूर्व चाहते हैं कि यह हमारा हृदयरूपी राष्ट्र है यह हर प्रकार से ऊँचा बना रहे। यह हमारी हृदयरूपी जो अयोध्या है इसमें वह राम विराजमान रहें जिस रामराज्य के ऊपर संसार व्याकुल होता चला जा रहा है। हे विधाता! आज हम शरीर को वह अयोध्या चाहते हैं जिसमें रामराज्य हो जाये। हमारी यह अयोध्यारूपी नगरी ऊँची बन जाये और वह विधाता इस नगरी में ओत-प्रोत हो जाये। वह विधाता इस राष्ट्र का स्वामी बन जाये।

हे विधाता! आज हम उस राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं जिस राष्ट्र में हमारा जन्म हो जो राष्ट्र देखो, हमारे शरीर का एक ऊँचा भाग हो। कैसे बनायेंगे? जब तक आपकी करुणा नहीं होगी, आपकी दी हुई प्रेरणा हमें नहीं मिलेगी। तब तक देखो हम इस संसार का, अपने शरीररूपी राष्ट्र का उत्थान किसी भी प्रकार नहीं कर सकते और न ही इसका निर्माण अच्छी प्रकार कर सकते हैं।

प्रभु ! हम अपना ही कल्याण नहीं चाहते, संसार का कल्याण चाहते हैं। जब संसार में रहने वाले प्राणियों का हृदय अयोध्या के तुल्य बन जाये, रामराज्य सबके हृदय में रमण कर जाये, उस काल में मुनिवरो! देखो, शान्ति का प्रदर्शन हो जायेगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 537 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 612
वर्ष : 45 44 समग्र वर्ष : 51

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. यज्ञमयी जीवन	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द मुनि जी	5-18
4. अग्नियों की पूजा	पूज्यपाद-गुरुदेव	19-37
5. ऋषियों के उद्‌गार		38
6. दान, पुस्तकों की सूची व प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		39-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गुणगान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' के रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFS Code – PUNB–0014900

website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

।। ओ३म् ।।

यज्ञमयी-जीवन

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। क्योंकि संसार का प्रत्येक मानव ये चाहता रहता है कि मैं वैज्ञानिक बनूँ, वैज्ञानिक बनने की उसकी कामना होती है। परन्तु विचार विनिमय ये करना है कि हमारा जो यह विज्ञानमय जीवन है जो विज्ञान की आभाओं से नियुक्त रहता है वह एक महान प्रियतम कहलाया जाता है। तो मुनिवरो! देखो विचार विनिमय क्या आज हम वैज्ञानिक बनने के लिये सदैव तत्पर रहें। हमारे यहाँ ऋषि मुनियों के जीवन में अग्न्याधान सदैव अग्नि प्रकाशित रहती है जिस अग्नि का प्रायः वे अग्न्याधान करते हैं। वह उनकी जो प्रवृत्ति है वह समिधा बन करके वह जो प्रदीप्त होती है जैसे सूर्य, मध्य सूर्य प्रकाश देता है अथवा सूर्य हमारे यहाँ समिधा बन करके तप रहा है, वह संसार को तपा रहा है। इसी प्रकार, संसार का प्रत्येक प्राणी जब तपने वाला बन जाता है तो समाज ऊँचा बन जाता है।

विचार विनिमय क्या आज मेरे प्यारे! महानन्द जी मुझे ये बाध्य करते रहते हैं कि आप यज्ञ के सम्बन्ध में कोई प्रकाश दीजिये। परन्तु मैंने कई काल में ये विचार विनिमय करते हुए मुनिवरो! देखो उनकी विचारध ाारा को लेते हुए तुम्हें एक ही वाक कहा था कि संसार में यज्ञम् ब्रह्मे श्रेष्ठा कृतिभ्य। उन्होंने, **हमारे आचार्यों ने ये कहा कि यज्ञ सँसार में सर्वत्र ऊँचा और महान कर्म कहलाया जाता है।** परन्तु देखो जैसे ब्रह्मा,

परमपिता परमात्मा इस संसार रूपी यज्ञ को चला रहा है, इसमें क्रिया दे रहा है इसी प्रकार ये प्रत्येक कार्य यज्ञ स्वरूप माने जाते हैं। एक मानव मुनिवरो! देखो ब्रह्मग्नि में तपता है, एक मानव भौतिक अग्नि में तपा करता है परन्तु उन आग्नियों में प्रायः वह तपता ही रहता है और वह तपने के पश्चात उसके जीवन की आभा एक प्रदीप्त हो जाती है। और वह महानता में वो भू.भूर्वःस्वः ये जो तीन व्याहृतियाँ हैं उनका वो पोषण अथवा उसमें अपने जीवन को समाहित कर देता है। आज जब हम अपने जीवन को इसमें समाहित करना चाहते हैं तो हमें ये प्रतीत होता है कि ये जो संसार है ये एक जीवन की आभा है। मानो ये संसार एक मानवता का एक कृतिरुद्र कहलाया जाता है। मेरे प्यारे! ऋषिवर यहाँ प्राणी प्रत्येक मानव, प्रत्येक का ऋषि मुनियों का प्रायः कर्त्तव्य रहा है यज्ञमयी अपने जीवन को बनाना चाहिये। वास्तव में मेरे प्यारे! महानन्द जी कुछ प्रकाश देंगे यज्ञ के सम्बन्ध में जो इनकी बड़ी उत्कठ इच्छा हो रही है।

आज तो केवल हम मानो इतना उच्चारण करना चाहते हैं कि आज हम मानो गायत्री की गोद में जाना चाहते हैं। गायत्री क्या है? मैं बेटा! किसी विशेष धारा को वास्तव में जो मन्त्र वेदों में कई-कई स्थलियों में प्राप्त होते हैं। चतुर्थ मानो पारायण में उनकी व्याहृतियाँ प्राप्त होती हैं। परिणाम ये कि हमारे यहाँ हमारे जीवन से एक-एक अक्षर का सम्बन्ध रहता है और वह जो जीवन की आभा वो जो अक्षर है, अक्षर पुरुष है वही आभायित रह करके जीवन को ऊँचा और महान् बना देता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं अधिक विवेचना तो नहीं देने आया हूँ केवल वाक्य ये उच्चारण करने आ पहुँचा हूँ कि हम अपने उस मानवीय जीवन को ऊँचा बनायें क्योंकि चरित्र और राष्ट्र दोनों का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। मानव समाज और चरित्र का दोनों का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। वेद का ऋषि तो ये कहता है क्या जिस राष्ट्र में से यज्ञ जैसा कर्म चला गया उस राष्ट्र का प्राण चला गया और वेद के ऋषि ने तो यहाँ तक कहा है क्या जिस राष्ट्र में से चरित्र चला गया उस राष्ट्र के मन की क्रिया

समाप्त हो गयी। तो परिणाम क्या मानो देखो वह जो स्तम्भ बने हुए हैं जीवन के और समाज के उन दोनों स्तम्भों को ऊँचा बनाने के लिये सदैव मानव को एक प्रयास करना है। क्योंकि जिस प्रयास द्वारा सदैव जीवन ऊँचा बना करता है, आभायित होता रहता है उस आभा को सदैव ऊँचा बनाना है और द्यौ मण्डलों को प्राप्त होना है। क्योंकि देखो एक यजमान जो यज्ञशाला में विराजमान होता है ब्रह्मा कहता है हे यजमान ऊर्ध्वा सूर्यम् गत्प्रव्हे ऋषि कहता है वेद का हे यजमान तेरी जो गति है वह सूर्य मण्डलों तक होनी चाहिए इस पृथ्वी से लेकर के। तो विचार आता है क्या मानो ऐसा क्यों कहा है ब्रह्मा ने, परन्तु एक वेद का ऋषि ऐसा उच्चारण कर रहा है परन्तु यजमान जान नहीं पाता। अब अभिप्राय ये कि यजमान कौन है जो यज्ञ करता है परन्तु वह **बाहरीय और आन्तरिक दोनों यज्ञों को करने वाला ही यजमान कहलाया जाता है।** जब दोनों प्रकार के यागों को यजमान करता रहता है तो यज्ञम् ब्रह्म व्यापक प्रव्हे परन्तु देखो वह ऊँचा बनता रहता है और उसकी गति आध्यात्मिकवाद में पारायण होती रहती है अथवा गतिशील रहती है। तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या आज हम अपने देव की महिमा का गुणगान गाना चाहते हैं। अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपना कुछ प्रकाश देंगे। आज केवल हम तो इतना ही अपना विचार देने आये हैं जैसा महानन्द जी का कृत होगा, उनके व्याख्यानों की भूमिका होगी उसके आधार के पश्चात् वह वार्ता प्रकट करें।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

ओ३म् तन्मया स्ता राधतम समिधा रेवतम् मानाः

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा भद्र समाज आज मैं ये क्या दृष्टिपात कर रहा हूँ एक स्थली में ज्ञान की आभा, एक स्थली में अज्ञान की आभा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी निर्णय कराया—यज्ञों के सम्बन्ध में नाना प्रकार की वार्ताएँ आती रहती हैं परन्तु आज के समाज ने केवल एक मनोनीत से तो यज्ञ माना है। अग्न्याधान करना जहाँ यज्ञ है, देवताओं को हवि देना जहाँ यज्ञ है। राष्ट्र को उच्चता में लाना जहाँ

यज्ञ है, एक दूसरे की चरित्रहीनता का न होना जहाँ यज्ञ है मानो ये सर्वत्र यज्ञ कहलाये जाते हैं। वह मानव इस संसार में अभागा होता है जिस मानव की यज्ञ जैसे कर्मों से प्रवृत्ति विमुख हो जाती है। वह धर्म के नामों पर रूढ़ियाँ अभागी हैं जो यज्ञों की प्रतिभा को न जान करके मानो देखो अपने तुच्छ व्यवहारों में परणित होती रहती हैं। वो मानो देखो रूढ़िवाद राष्ट्र और धर्म की मर्यादा को नष्ट कर देता है। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि ये जो संसार है ये बड़ा विचित्र है।

राष्ट्र का प्राण

महाभारत के काल में जो धर्मों के नामों पर नाना प्रकार की रूढ़ियों का प्रचलन हुआ परन्तु उन रूढ़ियों का परिणाम क्या हुआ कि राष्ट्र का प्राण ही समाप्त होने लगा। राष्ट्र का जो प्राण है वह यज्ञ जैसा कार्य है परन्तु देखो यहाँ उस यज्ञ के चले जाने पर, प्राण के चले जाने पर, दाह के चले जाने पर यहाँ रूढ़ियों का आक्रमण हो गया। उन रूढ़ियों, धर्म की रूढ़ियों ने धर्म के नामांकित रूढ़ियों ने इस राष्ट्र के और समाज के धर्म के वैदिक साहित्य को अग्नि के मुखारबिन्द में परणित कराया। परन्तु आज मैं इस विषय को नहीं उच्चारण करने आया हूँ, केवल ये उच्चारण करने आ पहुँचा हूँ क्योंकि धर्म के नामों पर मानो कितने मानव मानव का भक्षण हो जाता है। आज हमें मानव का भक्षण नहीं करना है। क्योंकि संसार में उस भव्यता को अपनाना है, उस महानता को अपनाना है जिससे हमारे जीवन की आभा आभायित और ओत-प्रोत होती है।

आओ मेरे प्यारे! पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे अभी-अभी निर्णय कराया क्या यज्ञ के सम्बन्ध में मैंने जब ये प्रश्न किया बहुत पुरातन काल से प्रश्न और उत्तरावलियाँ चलती रहती हैं परन्तु परिणाम क्या, क्या हम ये अपने में अनुभव करते हैं इस संसार को दृष्टिपात करके, क्या ये संसार अज्ञानता के मुखारबिन्दु में जा रहा है। यहाँ आज का मानव ये उच्चारण करता है कि विज्ञान ऊँचा है मानो देखो विज्ञान क्या है–विज्ञान ही मानो अपनी मानो यज्ञशाला से विज्ञान का जन्म होता है।

क्योंकि विज्ञान के कणों को, साकल्य के कणों को, घृत के कणों को जो इनका अध्ययन कर लेता है, जो इनके ऊपर अध्ययनशील होता है मानो देखो वह सँसार का वैज्ञानिक बन जाता है। परिणाम क्या मानो यहाँ रूढ़ियों ने धर्म की परम्परा को नष्ट कर दिया उसका परिणाम कहाँ तक अज्ञानता आ रही है क्या आधुनिक काल के जो राष्ट्र नायक है वो ये कहा करते हैं, उन्हें यह भय होता है, क्या तुम यज्ञ जैसे शुभ कर्मों में जाओगे तो तुम्हारा किसी काल में ये पाप समाप्त न हो जाये जो तुम करते रहते हो। मानो देखो ये मेरा विचार बना हुआ है क्योंकि उनकी मनोभावना उन वाक्यों पर नहीं चलती। वो क्या कहते हैं कि मोहम्मद के मानने वाले हमसे रुष्ट न हो जायें, ईसा के मानने वाले रुष्ट न हो जायें। परन्तु वो रुष्ट क्यों हो जायेंगे जब तुम शुभ कर्म करोगे? जब तुम अध्यात्म दर्शन को निर्णय करने वाले होंगे, विज्ञान को निर्णय करने वाले होंगे तो मानो वो तुमसे रुष्ट क्यों हो जायेंगे? परन्तु तुम बहुत समय तक यवनों के आधीन रहने से तुम्हारा आत्मबल समाप्त होता चला जा रहा है। परन्तु वह आत्मबल नहीं रहा आज जो तुम अपनी घोषणा कर सको कि हमारा कणाद का समय, हमारा महर्षि पतञ्जली और व्यास का जो दर्शन है। आज हमें वेदों की पोथी को विचारना चाहिए, उन पर अनुसन्धान होना चाहिए, उनके योगाभ्यास होना चाहिए उनसे विज्ञान की ऊँची-ऊँची तरङ्गों को जाना जाये। परन्तु जब ये वाक् आता है आज जब हमारी वैदिक सभ्यता को संसार का व्यक्ति तो अपनाता है। ईसा के मानने वाला कहता है यदि कोई शान्ति प्राप्त होती है तो उपनिषदों के गृह में जा करके हो जाती है। एक बार देखो मोहम्मद के मानने वाला कहता है कि वेदान्त पे जाकर के शान्ति स्थापित होती है। परन्तु उन विचारों को क्यों नहीं स्वीकार कर रहा है आज का राष्ट्रनायक? परन्तु देखो वो समय दूसरी नहीं रहा है जब मानो देखो सर्वत्र राष्ट्रों में अग्नि ऐसी प्रदीप्त हो जायेगी क्योंकि जब धर्म का लुप्त होने लगता है और धर्म पे राष्ट्रनायक भयभीत होने लगते हैं तो मानो देखो जो सभ्यता से भयभीत होता है उस मानव का आत्मबल नहीं रहता जब आत्मबल नहीं रहता तो उस मानव का जीवन समाप्त हो जाता है।

हर्ष ध्वनि का स्त्रोत

परिणाम क्या मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये वाक् अधिकता में प्रकट नहीं करूँगा परन्तु विचार ये देना चाहता हूँ क्या आज मानो शुभ कर्म मानव का, यज्ञ जैसे श्रेष्ठ कर्म को, आज मेरा अन्तरात्मा हर्ष ध्वनि करता है। हर्ष ध्वनि करता है क्योंकि यदि कभी मोहम्मद ने किसी काल में पदार्थ विद्या को जाना होता, ईसा ने पदार्थ विद्या को नहीं जाना परन्तु देखो संस्कृत भी नहीं जानते थे, न जानकार के ही मानो यज्ञ जैसा उन्होंने खण्डन नहीं किया। सुगन्धि का खण्डन नहीं किया क्योंकि ये उनके मानने वाले जो रूढ़िवादी बन गये हैं, वह जो रूढ़ि है मानो देखो उसने उसको सुगन्धि से दूरी कर दिया और दुर्गन्ध से मानो उन्हें भरण कर दिया दूसरों के रक्त को पान करने के लिये तो सदैव धर्म का रूढ़ि मानी जाती थी तो उसे वाम मार्ग कहा जाता है। और वाम मार्ग क्या होता है? ये मोहम्मद के मानने वाले सर्वत्र वाम मार्ग का प्रसारण, वाम का विचार रहता है। मानो देखो सत्य मार्ग से जब विचलित हो जाते हैं उस विचिलतता में मानव की मानवता समाप्त हो जाती है। परिणाम क्या होता है कि आज हम—यदि कोई राष्ट्रनायक ऊँचा बने तो एक ओ३म की पतिका के नीचे ये सर्वत्र राष्ट्र होना चाहिए। न तो यहाँ रूढ़ि होगीं न धर्म के नामों पर यहाँ एक दूसरे के रक्त को पान किया जायेगा। एक दूसरे के रक्त को पान वहाँ किया जाता है जहाँ रूढ़ियाँ होती हैं धर्म के नामों पर द्रव्य को एकत्रित करके उस द्रव्य की लोलुपता बन जाती है वहीं तो मानो देखो सर्वत्र विनाशता को प्राप्त होने लगते हैं।

राष्ट्र में धर्म और मर्यादा का पालन हो

मैं आज अधिक विवेचना नहीं देने आया हूँ आज मानो ये उच्चारण करने आया हूँ हे राजा हे आधुनिक काल के राष्ट्रनायकों तुम्हें विचारना होगा—धर्म और मर्यादा को विचारना होगा। यदि तुम धर्म और मर्यादा को नहीं विचारोगे तो राष्ट्र तुम्हारा कदापि ऊँचा नहीं बनेगा, उसको राष्ट्रवाद नहीं कहते हैं। आज एक नियम बनाया है कल वो नियम नष्ट होने वाला है उसको राष्ट्र नहीं कहते। क्योंकि राष्ट्र के

अधिक नियम नहीं होते उसके केवल चार पाद होते हैं। राष्ट्र के उन चार पादों में ही मानो देखो सर्वत्र राष्ट्र का निर्माण आ जाता है। चार ही पाद प्रभु को जानने के लिये होते हैं इसी प्रकार मानो देखो चार चार इनमें ही मानव संलग्न रहता है तो उसको आज हमें विचारना है, हमें अनुसन्धान करना है। हमें वेद की उस धारा पर विचार विनिमय करना है, जिस **वेद की धारा को विचारने वाला मानव केवल यज्ञशाला में अनुसन्धान करता है।** नाना प्रकार की समिधा और साकल्य को एकत्रित करता है। एक ब्रह्मा बना हुआ ब्राह्मण है वो वृष्टि यज्ञ का नायक है वृष्टि यज्ञ कराता है, पुत्रेष्टि यज्ञ कराता है। मानो वो विजय नामक यज्ञ कराता है तो नाना प्रकार के यज्ञों के घोष होते रहते हैं। यागों के घोष होते रहते हैं परन्तु उन यागों में आज का राष्ट्रनायक ये कहता है घृत को अग्नि में न परणित करो क्योंकि अग्नि—ये हमारा जो समाज है ये मानो अन्न से पीड़ित हो रहा है। अरे! वो काल कहाँ था महाभारत काल से पहले आज से भी गणना अधिक कहलायी जाती थी। मानो देखो त्रेता काल में भी गणना बहुत रहती थी, मानव बहुत था। मानो गऊओं का पालन होता था। राजा के राष्ट्र में, उस काल तक राजा का राष्ट्र ऊँचा नहीं बनेगा, राजा के राष्ट्र में कदापि भी अन्न की परम्परा समाप्त नहीं होगी। अहाः कृतम देखो अन्न से जो पीड़ित होने वाला प्राणी है उस काल में नहीं होगा जब राजा के राष्ट्र में देखो कामधेनु गऊ की पूजा होती है। दूध देने वाले पशु की पूजा होगी परन्तु जिस राजा के राष्ट्र में दुग्ध अधिक होता है अहाः उस राजा के राष्ट्र में अन्न का कभी अभाव नहीं होता, कोई मानव अन्न से पीड़ित नहीं रहता।

अन्न से पीड़ित हुआ—यह जो प्रकृति है माँ वसुन्धरा है। प्रभु भी माँ वसुन्धरा है जब आज का मानव, आज का राष्ट्रनायक जब माँसो की पूजा करता है। दूसरों के जीवों को नष्ट करके मानव उनके उस मांस को भक्षण करने लगा तो ये माता तुम्हें अन्न क्यों प्रदान करेगी? क्योंकि माता तुमसे वही वस्तु छीन लेती है जिस वस्तु से तुम मानो देखो माता से विरोध करते हो। जैसे माता का प्रिय बालक है और माता अपने पुत्र को नाना प्रकार जो माता का पुत्र अनुकूल करता है उसको माता सर्वत्र

प्रीति देती है, प्रतिभा देती है परन्तु जो प्रतिकूल चलता है उसको माँ अपने में पुत्रता को ग्रहण कर लेती है। परिणाम इसी प्रकार है पूज्यपाद गुरुदेव, हे ऋषियों हे भद्र समाज इसी प्रकार जब राजा के राज्य में मानो देखो दूसरे प्राणियों का हनन होने लगता है जो समाज के लिये लाभदायक हैं—मछली जैसा प्राणी लाभदायक है मानो देखो मृग जैसा प्राणी लाभदायक है। आज वो कितना लाभदायक है क्या वो इतना लाभदायक है क्या वो मानो अशुद्ध परमाणुओं को निगलता है। सर्प जैसी योनि समाज के लिये लाभदायक है मानो उसको प्रभु ने एक गुण दिया है और उस गुण का सम्बन्ध मानव के जीवन से रहता है परन्तु जो मानव उनका भक्षण कर जाते हैं इन्हीं को अपना मानो देखो उदर को ही जीव भक्षण करने का साधन बना लेते हैं तो मुनिवरो। उन प्राणियों को तुम्हें प्रतीत है क्या गति होती है? मेरे पूज्यपाद को तो प्रतीत है परन्तु उसकी गति क्या होती है उसकी गति ये होती है समा अवश्त्व प्रवहे अज्यातम् लोकम् ब्रह्मा मानो देखो उस राष्ट्र से अन्न चला जाता है। अन्न के अन्न चले जाते हैं ये माँ वसुन्धरा है मानो कामधेनु है। आज तुम इसकी जितनी पूजा करोगे ये उतना तुम्हें वैभव प्रदान करेगी।

गौ नाम के प्राणी की रक्षा होनी चाहिए इससे राजा के राष्ट्र में दुग्ध अधिक होना चाहिए जो सात्विक परमाणु ले करके आता है इस जगत में। इसी प्रकार हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ये वाक्य उच्चारण करना क्या मानो यज्ञ जैसे कर्म होने चाहिएं जहाँ मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ परन्तु देखो एक राष्ट्रनायक एक राष्ट्र का नेतृत्व करने वाला मानो मृग का तो उद्घाटन करने के लिये तत्पर हो जाता है परन्तु देखो जब यज्ञ जैसे कर्मों को ये कहा जाये क्या तुम भगवन् वहाँ चलिये तो उस समय यह उच्चारण कर रहा है अरे भई राष्ट्र में तो अन्न की बड़ी विशेषता है। अरे, मानो इसका तुम्हारे ऊपर क्या दायित्व है? तुम्हारा उदर प्रबल बन जाये ये समाज कहीं चला जाये परन्तु उदर तो तुम्हारा ही है। परन्तु देखो उदर तुम्हारा ऊर्ध्वा होना चाहिए। आज का मानव मानो देखो जहाँ मैं ये विचारता रहता हूँ, जहाँ आज का मानव अन्न से पीड़ित है अन्न से पीड़ित क्यों है इसलिये है क्योंकि जो नेतृत्व करने

वाले राष्ट्र का उनका उदर ऊँचा होना चाहिए उनके उदर में मानो अधिक भक्षा भक्ष होना चाहिए। साधारण समाज कहीं चला जाओ।

पुण्य का उदय न होना

परन्तु देखो जहाँ यज्ञों के सम्बन्ध में कहा जाये तो ये कहा जाता है ये क्यों कहा जाता है इसलिये कहा जाता है क्योंकि उनका पुण्य का उदय नहीं है मानो उनका पाप का उदय हो रहा है। पाप का उदय होने के नाते मस्तिष्क ही नहीं चलता। हाँ एक वाक्य है यदि एक अप्रतम् रूढ़िवादी ये कहे कि आओ महाराज क्योंकि रूढ़ियों से तो उसे सहायता प्राप्त होनी है परन्तु देखो रूढ़िवादियों का वह पूजन करने के लिये भी तत्पर है तो ये मानव का जीवन अभागा है। मानव के जीवन में कोई विशेषता नहीं है, मैं स्वीकार करता हूँ। परन्तु देखो मैं अधिक विवेचना नहीं दूँगा।

यजमानों को आशीर्वाद

यज्ञ के सम्बन्ध में आज मैं यजमानों का आशीर्वाद देने आया हूँ। हे यजमानों तुम्हारा जीवन उर्ध्वा बने, हे यजमानो तुम्हारा सौभाग्य सदैव अखण्ड बना रहे मेरे हृदय की ये वेदना रहती है। आज जो यजमान जिस कामना से बने, वो कामना प्रभु उनकी पूर्ण करता रहे, यज्ञ भगवान् पूर्ण करता रहे मानो क्योंकि वह प्रकृति के परमाणुओं में मिश्रित हो जाता है परमाणु। तो इसीलिये मानो वह जो परमाणु है वह उसी में ओत प्रोत रहने चाहिए। हे यजमान मानो तेरा सौभाग्य इस संसार में अखण्ड बना रहे, तेरा जो जीवन है वो सदैव सूर्य की भाँति चमकता रहे कोई भी अशुद्धियाँ तेरे जीवन में न हो। वाणी का उदघोष करने वाला भक्ष अभक्ष को पान न करने वाला मैं यजमानों को उच्चारण अवश्य ये करता रहता हूँ क्या यजमानों को माँस इत्यादि का सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि **यजमान सदैव सौभाग्य से ही प्राप्त होते हैं।**

अहाः उनका जीवन देखो वह मुझे तो स्मरण आता रहता है। पुरातन काल में जो यजमान बनता था ऋषि मुनियों की सम्मति ली

जाती। उनको छः छः माह तक व्रत लिया जाता उसके पश्चात् जब वो याग करते थे वो याग सफलता में प्राप्त होता रहता था।

यजमानों को उद्‌बोधन

परन्तु आज तो मैं ये उच्चारण कर सकता हूँ न करने से कुछ करना बहुत सुन्दर माना जाता है। रहा ये कि मैं यजमानों को ये उच्चारण करने जा रहा हूँ सपत्नी स्वास्थ्य ऊँचा रहे परन्तु उनकी मनोकामना पूर्ण होनी चाहिए। उनको अपने जीवन में देखो यजमान को तो वाक्यों पर अनुसन्धान करना है। मानो गृहस्थ जब नरक बनता है तो कौन सा गृह नारकिक बनता है जिस गृह में परा स्त्री से मानव गमन करने लगता है तब उस गृह का पुण्य समाप्त हो जाता है। मानो पति पत्नी में प्रसन्नता नहीं रहती, उद्‌घोषणा नहीं रहती। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रश्न करता रहता हूँ मैं भी उसका समाधान कर सकता हूँ परन्तु देखो करता रहता हूँ। वो मानव बड़ा अभागा है, वो मेरी पुत्री बड़ी अभागी है जो मानो देखो परा पुरुष और परा स्त्री गमन करने की चेष्टा करता है। उस मानव को मैं तो प्रभु से ये कहा करता हूँ ऐसे प्राणियों का सुकृत नष्ट हो जाता है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा है जिस गृह में मानो पन्द्रह वंशलज चरित्रहीन चलते आये हैं पन्द्रह वंशालियों में उसका देखो कोई वंशलज नहीं रहता पन्द्रह के पश्चात्। इसी प्रकार मानो देखो ये आज मानव को विचारना है जो मानव गृह को नरक बनाना चाहता है वो परा स्त्री गामी होता है। राजा का कर्त्तव्य है राष्ट्र के कर्मचारियों का क्या ऐसे प्राणियों को मानो देखो उसको ऐसे प्राणी को नष्ट कर देना चाहिये। परन्तु देखो हमारे यहाँ नियम है राष्ट्र का द्रोही कौन है? राष्ट्र का द्रोही वो कहलाता है जो राजा के राष्ट्र में चरित्र हीनता को लाता है, परा स्त्री गामी होता है। दूसरे की पुत्रियों को कुदृष्टिपात करने वाला होता है वह मानव राजा के राष्ट्र में जो ऐसा प्राणी है, वह जो यजमान है वह जो मानव है वह अपने गृह को नरक बना रहा है। अगले जन्मों के लिये मानो पापों को एकत्रित कर रहा है और अपने पुण्यों को समाप्त करता चला जा रहा है। तो ये मैं आज गौरव के सहित कहा करता हूँ। परन्तु मैं अधिक चर्चा तो प्रकट नहीं करूँगा।

केवल वाक्य ये उच्चारण करने जा रहा हूँ हे यजमानो तुम्हारा जीवन अखण्ड बना रहे। हे ब्राह्मणों जो वेद का पठन-पाठन करने वाले जिनका मानो उद्गान चलता हो उद्गाताओं के द्वारा मैं ये कहा करता हूँ यज्ञ करने वाले कर्मकाण्डी ब्राह्मण हों और उनका आयु दीर्घ हो उनके आयु में एक महानता हो उनके जीवन में विवेकता होनी चाहिए। वह जो विवेक है वही तो राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाता है। इसीलिये आज मैं अधिक चर्चा तो प्रकट नहीं करूँगा क्योंकि मुझे पूज्यपाद गुरुदेव की इतनी आज्ञा नहीं है।

परन्तु विचार विनिमय यही है कि आज यजमानों को मैं यही उच्चारण कराऊँ उनकी यहाँ सर्व सम्पदा होनी चाहिए यजमान अपने चरित्रों को ऊँचा बना लें और परमात्मा उनके मनोकामना की पूर्ति हो जाये तो मानो देखो ये गृह स्वर्ग बन गये। गृह तो स्वर्ग उसी काल में बनते हैं जब मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाता है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से बहुत ही पुरातन काल में नाना प्रकार की वार्ताएं प्रकट कीं परन्तु देखो आज भी करता रहता हूँ। मानव को अपने जीवन में सुचरित्र होना चाहिए, मानवता का प्रसार होना चाहिए और राष्ट्रीयता का होना चाहिए जिससे यह राष्ट्र और समाज पवित्र बनता चला जाये। मैं आज अधिक विवेचना नहीं प्रकट करने आया हूँ।

लाक्षागृह का इतिहास

केवल यज्ञों के सम्बन्ध में मैं मानो देखो ये मेरा कैसा सौभाग्य है। मानो इस भूमि पर ये महाभारत काल की वो पवित्र भूमि है मानो जहाँ व्यास मुनि महाराज ने देखो वेदान्त की लेखनीबद्ध की थी। ये वो पावन भूमि है मानो जहाँ देखो पाँचों पाण्डव आये और उन्होंने देखो वो जीवित चले गये। ये वो पवित्र भूमि है जहाँ महाराजा दुर्योधन ने नष्ट करने के लिये एक मानो देखो मन्दिर का निर्माण किया, गृह का निर्माण किया। वह ऐसा गृह था वैज्ञानिक तत्वों से बना हुआ ऐसे सूकत्रोतों से बना हुआ था जिसमें अग्नि सदैव बहुत ही शीघ्रता में प्रसारित हो सकती थी परन्तु देखो यहाँ से वो प्रभु की और मानो महात्मा विदुर के कथनानुसार

यहाँ से जीवित चले गये। आज वही भूमि जहाँ महाराजा भीम का यहाँ मानो देखो एक विज्ञानशाला रही है। घटोत्कच्छ ने एक ही नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण किया हो। यहाँ इसी प्रकार ये भूमि क्या बनती चली गयी सदैव ये भूमि देखो मन्दिरों में चली आयी। अहा? उसके पश्चात् मोहम्मद के मानने वालों ने आ करके इसको श्मशान बना दिया।

यज्ञ-भूमि पूज्यपाद गुरुदेव की तपस्थली

परन्तु देखो मैं यह नहीं जानता मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मानो किसी काल में इस भूमि पर कोई तपस्या की होगी। मैं नहीं जानता उस भौतिक जीवन से संसारिक जीवन से भूमि से बड़ा सम्बन्ध है और वह क्यों है इसको मैं नहीं उच्चारण करूँगा, किसी काल में और ही प्रकट करूँगा। ये तो केवल हो कि किसी काल में तप किया गया होगा और वो तप के कण अन्तःकरण में जागरूक हो गये होंगे मानो देखो जिससे नाना प्रकार की कठिनाइयों के मृत्यु के मुखारबिन्द में जाने के पश्चात् भी वो निष्ठा ज्यों कि त्यों बनी रहती है। इसी प्रकार आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के भौतिक शरीर से ये कहा करता हूँ क्या जीवन में निष्ठा बनी रहे। मानो देखो पुत्री को पुत्री की दृष्टि से माता को माता की दृष्टि से सदैव पान होती रहे। मैं पूज्यपाद गुरुदेव को प्रेरणा भी देता रहता हूँ किसी-किसी काल में।

सूक्ष्म शरीर से यज्ञ मण्डपों का दर्शन

परन्तु रहा ये आज मैं अपने सूक्ष्म शरीर के द्वारा जब मैं मण्डपों का विचार करता हूँ, मैंने मण्डपों को दृष्टिपात किया तो मेरा अन्तरात्मा बहुत प्रसन्न हुआ और अन्तरात्मा में एक ज्योति जागरूक हो गयी वह जो ज्योति थी मानो देखो उससे मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरा अन्तरात्मा तो बहुत ही पवित्र बनता चला जा रहा है। इसी प्रकार मानो देखो मैं ये वाक् और उच्चारण करने जा रहा हूँ इसके पश्चात् मैं अपना वक्तव्य समाप्त करूँगा। मानो देखो ये जो भूमि जहाँ इस पर नाना प्रकार के प्राणियों का हनन हुआ हो आज वही भूमि जहाँ दूसरे की पुत्रियों के शृंगार का हनन किया जाता हो आज वही भूमि यज्ञों में

परिवर्तित हो गई है यह कितना सौभाग्य है भूमि का मानो ये समाज का और जो अन्तिती अस्तो इस पर जो समाज रहने वाला है उसका भी तो सौभाग्य है। रहा ये वाक् कि मानो देखो यहाँ क्या नहीं हुआ उस वाक् में मुझे जाना नहीं है। मैं उन वाक्यों में जाना नहीं चाहता हूँ परन्तु केवल इस सम्बन्ध में तो एक ही विचार देने आया हूँ कि हम अपने जीवन को ऊँचा बनाने में सदैव तत्पर रहें। हमारे जीवन की सहकारिता बनी रहे हम उस सहकारिता को अपने जीवन में ऊँचा बनाने के लिये सदैव तत्पर रहें।

आज मैं अधिक विवेचना तो प्रकट करने नहीं आया हूँ। केवल ये क्या ये मानो भूमि जहाँ देखो ये वही अहिल्या है जिसका भगवान् राम जैसे महापुरुषों ने कल्याण किया हो जब निषाद को ले करके भूमि पर अन्न उत्पन्न किया गया हो आज ये वो ही अहिल्या भूमि है जो मानो देखो वज्र के तुल्य थी आज वो भूमि हरी भरी होने जा रही है ये कितना सौभाग्य है भूमि का। ये अहिल्या है, अहिल्या का उद्धार करने वाला मानो कोई-कोई प्राणी जैसे भगवान् राम थे अहाः उन्होंने निषाद के राष्ट्र को हरा भरा बना दिया। इसी प्रकार आज मुझे ये दृष्टिपात आ रहा है।

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह आज्ञा पाऊँगा क्या मानो मैं ब्राह्मणों को, उदगाताओं को, ब्रह्मचारियों को और क्योंकि वह कुछ ही ब्रह्मचारी हैं इसमें, कुछ अब्रह्मचारी हैं मानो देखो कुछ वेदपाठी जो ब्रह्मा हैं उनमें बहुत गम्भीरता का मैं दर्शन कर रहा था, अपने में दृष्टिपात कर रहा था। मैं यह चाहता हूँ, उनकी सदैव गम्भीरता, उदारता और भी ज्ञान के गर्भ में जायें, प्रकृति के गर्भ में जायें संसार को लाभ प्रदान करें इससे साथ-साथ मैं ये उच्चारण कर रहा हूँ, स्वास्थ्य उनका बना रहे। साथ-साथ ब्राह्मणजन अवश्य अपने में अनुसन्धान करें स्वास्थ्य ऊँचा होगा तो वेद का प्रसार होगा। अब मैं इसके साथ अपने वाक्यों को समाप्त कर रहा हूँ।

पूज्यपाद-गुरुदेव

धन्य हो! मेरे प्यारे ऋषि मण्डल, आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक अपना सुन्दर विचार दिया परन्तु उन विचारों में कोई मानो रूढ़िवादिता,

कोई कटुता हो तो मैं नहीं उच्चारण कर सकता। रहा ये वाक्य मैं भी जैसा महानन्द जी आज मानो देखो अपना इस सम्बन्ध में विचार दे रहे थे यज्ञों के सम्बन्ध में, यजमानों के सम्बन्ध में, यज्ञ तो मानव का जीवन होना ही चाहिए परन्तु देखो यज्ञ जितना होगा उतना राष्ट्र समाज में आस्तिकता का प्रसार होगा जितना आस्तिकता का प्रसार होगा उतना ही मानव समाज में चरित्र होगा तो इसीलिये आज मैं ये ही उच्चारण महानन्द जी के कथनानुसार ब्राह्मणजन ब्रह्मचारियों को और यजमानों को मैं यही कहा करता हूँ कि मनोकामना पूर्ण करे परन्तु मनोकामना में धर्म और मानवता होनी चाहिए। परन्तु रहा ये वाक्य समाज में मुझे तो ऐसी बहुत सी बातों का प्रतीत होता है। परन्तु रहा ये कि व्यास मुनि ने इस भूमि पर तपस्या की तो बहुत ही प्रियतम मैं मानता हूँ उन्होंने प्रसार किया। इसी प्रकार यहाँ देखो भूमि का महाभारत के काल में जैसा महानन्द जी ने मुझे प्रगट कराया मैंने भी दृष्टिपात किया क्या यहाँ महाराजा द्रोर्णाचार्य के अहाः अस्त्रों-शस्त्रों का एक ही स्थल रहा है तो इसके साथ मैं अधिक चर्चा नहीं दूँगा। महानन्द जी ने बहुत कुछ अपने विचार दिये हैं।

आज का हमारा वाक्य तो ये कि हम अपने प्यारे प्रभु का गुणगान गाते रहें देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, अपने प्यारे प्रभु का गुण गान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जायें। ये आज का वाक्य समाप्त अब वेदों का पाठ होगा। हे यजमानों तुम्हारी कामना पूर्ण हो, आत्मबल तुम्हारा बलवान हो, यज्ञ ऊँचे करते रहो। ब्राह्मणों का जीवन ऊँचा हो और स्वस्थ होना चाहिए। ये इसके साथ मैं अपने विचारों को समाप्त कर रहा हूँ।

वेदपाठ.....

पूज्य महर्षि महानन्द जी — अच्छा भगवन्!

पूज्यपाद-गुरुदेव — आनन्द मंगलाचार, शान्तिः

दिनांक : 11 मार्च, 1973
समय : दोपहर 3 बजे
स्थान : लाक्षागृह, बरनावा

।। ओ३म् ।।

अग्नियों की पूजा

(ज्ञान स्त्रोत)

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का प्रायः वर्णन किया जाता है। क्योंकि प्रत्येक मानव के हृदय में ये आकांक्षा रहती है क्या मैं एक-एक वेद मन्त्र को, एक-एक वेद ऋचा को मैं अपने हृदय में धारण करना चाहता हूँ, मैं अपने में समाहित करना चाहता हूँ। परन्तु जब मानव इनका स्मरण करता है और स्मरण करके इनके संस्कार रूप बना करके अपने चित्त में स्थित कर देता है तो जब वे चित्त में स्थित हो जाते हैं तो जिस भी काल में मानव, उन वाक्यों का स्मरण करता है वो चित्र मानव के समीप आने प्रारम्भ हो जाते हैं अथवा उनका चित्रण होना प्रारम्भ होने लगता है क्या हम आचार्य के समीप विराजमान होकर के इन वाक्यों का देखो अमुक समय पर हमने स्मरण किया, परन्तु इनका अध्ययन किया। तो ऐसा वो मानव सदैव उसका मन्थन करता रहता है उसका अन्तिम परिणाम ये होता है कि मानव की ऊर्ध्वा गति होनी प्रारम्भ हो जाती है।

अनन्तवत्

मेरे पुत्रो! मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें यौगिक चर्चाएँ की हैं। मेरे प्यारे महानन्द जी का तो सदैव मन्तव्य ये रहता है क्या अग्नि के गर्भ में प्रवेश हो जाओ, जल के गर्भ में प्रवेश करो और वायु के

गर्भ की चर्चायें तो करते ही रहो। परन्तु आज मैं बेटा! उन चर्चाओं को विस्तार देना नहीं चाहता, मैं इनके गर्भ में जाना नहीं चाहता, मेरा वो समय बेटा! समापन को प्राप्त हो गया है। जब मैं इन वाक्यों को पुरातन काल से ही प्रकट करता चला आया परन्तु समय की अव्यक्ता, उस समय की सूक्ष्मता मेरे पुत्रो! देखो! अब्रहा अभाव हो गया है। आज मैं तुम्हें नाना चर्चाएँ करता हुआ ये वाक्य प्रगट करने जा रहा हूँ आज का हमारा वेद का ऋषि क्या कह रहा है। वैदिक मन्त्र को बेटा! प्रत्येक मानव उनका विभाजन करता है, एक-एक शब्द का विभाजन करता रहता है और उस मन्त्र को जब विचारने लगता है, मन्त्रणा करता है तो मेरे पुत्रो! उसमें से नाना प्रकार की आभाओं का जन्म होना प्रारम्भ हो जाता है। मानव का मस्तिष्क बेटा! विकासता को प्राप्त होने लगता है। परन्तु उन वाक्यों को विचारने से हमें ये सिद्व होता है, हमें कुछ ऐसा ही आभास होने लगता है कि परमात्मा का ये जगत अन्नत है और जैसे परमपिता परमात्मा का जगत अनन्ततामय है इसी प्रकार बेटा! उसका मानो ब्रह्माण्ड अब्रहे वह परमात्मा भी बेटा! अनन्तवत् माना गया है। आज मैं अनन्ता की चर्चा करने नहीं आया।

महान याग को जानने की आवश्यकता है

बेटा! मैं तुम्हें ये वाक्य उच्चारण करने के लिये आया हूँ क्या मैं अग्नियों की पूजा करने के लिये आया हूँ। पुत्रों! वो काल था यज्ञशाला में यजमान याग कर रहा है, अग्नि प्रदीप्त हो रही है परन्तु उस अग्नि के समीप हो करके यजमान मानो देखो यज्ञशाला में यजमान याग कर रहा है। विद्यालय में आचार्य और ब्रह्मचारी याग कर रहे हैं। गृहस्थल में बेटा! देखो पति पत्नी याग कर रहे हैं। मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें ये निर्णय देते हुए कहा कि **ये जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड है ये एक प्रकार का याग हो रहा है,** इसमें एक महान याग हो रहा है। बेटा! उस याग को जानने की आवश्यकता है।

मानवीय जीवन

मुझे बेटा! वो काल स्मरण है महर्षि धुन्धरी ऋर्षि महाराज जब याग करते थे तो बेटा! जब वो स्वाहाः उच्चारण करते थे तो वाणी में इतना प्रकाश था क्या मुनिवरो! देखो स्वाहाः अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाता और अन्तरिक्ष में से पुनः वो ऋषि के चित्रों को ले करके बेटा! अन्तरिक्ष में गमन करता था। तो ऋषि ये विचारने लगा, ये विचारने लगे ऋषिवर क्या मेरे जो शब्द के साथ में स्वाहाः के साथ में जो चित्र चला गया है वो मानो देखो उन्होंने एक यन्त्र का निर्माण किया और उस यन्त्र में मुनिवरो! देखो जो यज्ञ स्वाहा होता था यज्ञ में जो आवहनीय अग्नि प्रकाश दे रही थी, यज्ञ की अग्नि में जो प्रकाश हो रहा था मेरे पुत्रों। देखो उस प्रकाश में जो चित्र जा रहे थे, शब्दों के चित्र जा रहे थे, मुनिवरो! देखो वो उनके यहाँ यज्ञशाला में यन्त्र विराजमान है उस यन्त्र में बेटा! वो चित्र आ रहे हैं और ऋषि दृष्टिपात कर रहा है। उनके एक शिष्य थे बेटा! सुद्धातत्व ऋषि महाराज। सुद्धातत्व ऋषि महाराज से कहा देखो ब्रह्मचारी ये कैसा चित्र है? तो मुनिवरो! देखो ऋषि ने, ब्रह्मचारी ने ये कहा ऋषि से कि प्रभु ये तो हमारा जीवन है, ये तो मानवीयत्व का कर्त्तव्य है क्या ज्ञान और विज्ञान में जाना तो एक स्वाभाविकत्व माना गया है। बेटा! हमारे जो ऋषि मुनि थे पुरातन काल में, मैं आज से बेटा! लाखो बरसों पूर्व की चर्चा कर रहा हूँ मानो उस काल में प्रत्येक मानव याज्ञिक बना हुआ है और याग करता हुआ मुनिवरो! देखो अपनी प्रवृत्तियों को, अपने विज्ञान को ऊर्ध्वा में ले जाना चाहता है।

उत्तम-कर्म

विचार ये आता हैं एक समय बेटा! ऋषि से ये प्रश्न किया गया क्या महाराज ये जो याग है इस याग से दूसरी भी वस्तु संसार में कोई है अथवा नहीं जो उत्तम कर्म करने के लिये। तो उस समय धुन्धरेत्वर ऋषि महाराज बोले हे ब्रह्मचारियों इससे ऊर्ध्वा गति में जाने

वाला कोई कर्म नहीं है क्योंकि ये ऐसा कर्म है जो मानव को ऊर्ध्वा गति में ले जाता है, ये याग है। याग के भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप माने गये हैं।

आश्चर्य के शब्द

मुनिवरो! देखो मेरे प्यारे महानन्द जी भी याग करते रहे हैं तो ये कहा करते थे जब वेद मन्त्र का अध्ययन करते, आज इनका प्रश्न इनके समीप परन्तु इनका अनुभव भी इस सम्बन्ध में रहा है। जब ये याग करते थे तो एक-एक वेद मन्त्र को विचारते और विचारता हुआ मानो देखो ये विचारते रहते थे कि हमारा संसार में कोई शत्रु नहीं रहना चाहिए। परन्तु जब वेद में ये विचारते कि हमारा यजमानभ् अब्रहे। **जो मानव याग करता है उस मानव का कोई भी सँसार में शत्रु नहीं होता।** ये मैं एक बहुत आश्चर्य का शब्द उच्चारण कर रहा हूँ पुत्रों! हम बाल्यकाल में अपने पूज्यपाद गुरूदेव से ये प्रश्न किया करते थे। क्योंकि पूज्यपाद गुरूदेव जब सामगान गाते थे, यजोंषि गान गाते थे, जटा पाठ और घन पाठ में स्वरों के सहित जब गान गाते थे तो उनके शब्दों को श्रवण करने के लिये बेटा! देखो पक्षीगण, हिंसक प्राणी आते उनके चरणों को छुआ करते थे। तो मुनिवरो! देखो उस समय हम ये विचारते रहते थे, पूज्यपाद गुरूदेव से ये प्रश्न करते रहते थे कि प्रभु क्या वेद का वाक्य ये हमें सिद्ध होता हमें दृष्टिपात होता है कि मानव का कोई शत्रु ही नहीं है।

परन्तु शत्रु किनका है? जो याग नहीं करते हैं। शत्रु किनका है संसार में? यदि कोई प्राणी का कोई शत्रु है तो जो याग नहीं करते और जो याग करके मानो देखो उसको आडम्बर बना देते हैं अथवा उसको विडम्बना में ले जाते हैं, जो याग करते अपने जीवन को यागमय नहीं बनाते तो उनके सँसार में सहस्त्रों शत्रु उत्पन्न हो जाते हैं।

परन्तु देखो ये वाक्य मैं और भी विचित्र उच्चारण कर रहा हूँ

पुत्रों ! मानो देखो अग्न्याधान करने से ही, याग में आहुति देने से ही इस सँसार में मानव याज्ञिक नहीं हो जाता है हास्य...

गार्हपत्य जीवन की पूजा

बेटा! मुझे वो काल स्मरण है जब ब्रह्मचारी याग करता है। ब्रह्मचारी गार्हपत्य नाम की अग्नि की पूजा कर रहा है उस अग्नि को हमारे यहाँ गार्हपत्य नाम की अग्नि कहा जाता है। जो पथ है जो मानो देखो वृतिस्तप का पथ कहलाया जाता है। हमारे यहाँ जब ब्रह्मचारी आचार्य कुल में जाता है तो आचार्य कुल में प्रवेश करके बेटा ! उसे आचार्य ब्रह्मचारी को मुनिवरो! देखो गार्हपत्य अग्नि की पूजा कराता है उसे आवहनीय प्रहाः अग्नि भी कहते हैं। मेरे पुत्रों! जब वह अग्नि की पूजा करता है, **अग्नि का अभिप्रायः क्या है मुनिवरो!** देखो मानव के अन्तःकरण में जो सँस्कार विद्यमान होते हैं—ब्रह्मचारी से कहता है आचार्य हे ब्रह्मचारी तेरे जो अन्तःकरण में जो नाना करोड़ों जन्मों के जो सँस्कार विद्यमान हैं उन सँस्कारों को तू बाह्यीय जगत से और मेरे चरणों में विराजमान हो करके उन सँस्कारों को जागरूक कर। अब मुनिवरों! देखो ब्रह्मचारी गार्हपत्य अग्नि की पूजा करता हुआ मानो देखो उन सँस्कारों को उद्बुद्ध करना प्रारम्भ करता है। जब वो प्रारम्भ कैसे करता है? मुनिवरो! देखो वो प्रारम्भ इस प्रकार करने लगता है—शान्त मुद्रा में विराजमान होता है, एक-एक शब्द को अंकित करने लगता है। अपने में वो ही बेटा! जो मैं कल के अधूरेपन को त्याग गया था अपने विषय को, उसी की मैं पुनारूक्ति कर रहा हूँ। मैं मानो देखो उसी को अग्रणीय बना रहा हूँ क्या जो विषय हमारा कल का मानो कुछ शब्द संक्षेप से रह गया था। तो मुनिवरों! देखो ब्रह्मचारी जब अपने सँस्कारों को उद्बुद्ध करता है वो कैसे करता है—आचार्य के चरणों में ओतप्रोत है। चरणों में ओतप्रोत हो करके मुनिवरो! देखो आचार्य कहता है हे ब्रह्मचारी तुम गो नाम की रक्षा करो, तुम गौ नाम की सेवा करो। तो मेरे प्यारे! देखो सेवा क्या है **बुद्धि—गो नाम बुद्धि का माना गया है और उसकी सेवा**

क्या उसका सदुपयोग है, उसका पूजन है। पूजन का अभिप्राय क्या उस बुद्धि का सदुपयोग लाया जाये सदुपयोग में उसको लाने के पश्चात् जीवन को अग्रणीय बनाना चाहिए।

मेरे पुत्रों! देखो वो चरणों में विराजमान है, प्राणत्व को जानने के लिये तत्पर है, मनस्तत्त्व को जानने के लिये तत्पर है। तो मुनिवरो! देखो वो इतना तन्मय हो जाता है कि वो सँसार की कोई वार्ता श्रवण नहीं करता, वह सँसार के विषैले सँस्कारों को अपने तक आने नहीं देता परन्तु एक-एक श्वाँस को एक-एक मानो अपने उस मोती मानो देखो उस मानो एक-एक मनके को धागे में पिरोता रहता है। मानो देखो जब वो चरि को जान लेता है कि ब्रह्म की चरि क्या है जिसकी मुझे रक्षा करनी है। वह मेरे प्यारे! देखो प्राण के द्वारा, महानता के द्वारा, मुनिवरो! देखो वह अपनी गति को ऊर्ध्वा बनाता है। ब्रह्मचरिष्यामि, वो ब्रह्मचर्य की गति को ऊर्ध्वा बनाता है और **ब्रह्मचर्य की गति को ऊर्ध्वा कैसे बनाता है**—प्राण के द्वारा और मन, मन को मुनिवरो! देखो प्राण को और मन को, दोनों को समावेश करता है प्राण के द्वारा तो मुनिवरो! देखो ब्रह्मचर्य की गति वो ब्रह्मरन्ध्र तक ले जाता है। जब वो ब्रह्म तक ले जाता है तो याग कर रहा है। वो चाहता है कि मैं याग करूँ परन्तु मेरा सँसार में कोई शत्रु न रहे। अब देखो वह याग करता साकल्य के द्वारा। वो अग्न्याधान कर रहा है मानो वो बाहरीय जगत का अग्न्याधान कर रहा है और आन्तरिक जगत का भी अनुसन्धान करता उसका भी अग्न्याधान कर रहा है, वह मानव देखो दोनों प्रकार के यागों में तत्पर है। जब वह तत्पर होता हुआ वो गार्हपत्य नाम की अग्नि की पूजा करता है।

अग्नि के नाना स्वरूप

उस गार्हपत्य नाम की अग्नि की पूजा करने के पश्चात् मेरे प्यारे! उस अग्नि को बाहरीय जगत, बाहीय और आन्तरिक जगत दोनों का एकता में लाने का प्रयास कर रहा है। प्रयास करता हुआ

मुनिवरो! देखो मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें ये निर्णय कराया था क्या वह जो **मानव जो ब्रह्मरन्ध्र में अपनी गति ले जाता है** तो अग्नि का आश्रय लेता है। **यहाँ अग्नि नाम बेटा! इस भौतिक अग्नि को ही नहीं माना है।** यहाँ अग्नि के नाना प्रकार के स्वरूप माने हैं जैसे सूर्य नाम केवल प्रकाश का है, वेद नाम प्रकाश का है। जैसे मुनिवरो! देखो ये बाहरीय जगत को ये जो सूर्य प्रकाशित करता है मानो प्रकाशित करता हुआ इसी प्रकार जो मानव का आन्तरिक सूर्य है वेद की ज्योति, जो प्रकाश दे रही है **उस वेद की ज्योति को मानो ज्ञानरूपी जो ज्योति है वो जो प्रकाश देती है।** तो मेरे प्यारे! देखो प्रकाश—जब मन और प्राण दोनों एक सूत्र में हो जाते हैं तो मुनिवरो! देखो यहाँ रीढ़ के विभाग से मुनिवरो! दो नाडियाँ चलती हैं। मैंने दोनों नाड़ियों की चर्चाएँ बहुत पुरातन काल में की उनका सम्बन्ध ब्रह्मरन्ध्र से हो जाता है और ब्रह्मरन्ध्र में जा करके जैसे मानो देखो वृक्ष पर एक पुष्प खिल जाता है, उस पुष्प के तुल्य ब्रह्मरन्ध्र में उन नाड़ियों में से नाना वाक नाड़ियाँ जैसे पुष्प में होती हैं इसी प्रकार वो उन नाड़ियों का सम्बन्ध मेरे प्यारे! नाना लोक लोकन्तरों से हो जाता है। और नाना लोक लोकान्तरों से होता हुआ किसी का अमृत बहाने वाला मानो कोई प्रकाश ला रहा है, कोई लोकों के जीवन को ला रहा है, कोई वहाँ के प्राणी के जीवन की गाथा गा रहा है। वो नाना प्रकार की मानो देखो नाना प्रकार की आभाएँ नाना प्रकार की तरङ्गें बेटा! मानव के मस्तिष्क में आनी प्रारम्भ हो जाती हैं। और जब वे मानव के मस्तिष्क में आनी प्रारम्भ हो जाती हैं तो मुनिवरों! देखो वह जो पुष्प है वह ज्यों का त्यों नाना नाड़ियों के द्वारा मेरे प्यारे! देखो वह योगाभ्यास करने वाला वो साधक मेरे प्यारे! देखो जब वह आन्तरिक अपने जगत को दृष्टिपात करता तो नाभि जो केन्द्र है, नाभि जो स्थली है उस नाभि में बेटा! जो एक कुरूतुक नामक एक स्थली कहलाती है। कुरूतुक नाम की जो स्थली है उसमें बेटा! वो सूर्य चन्द्रमा से मानो देखो दोनों को दोनों से सोम्य ले रहा है। यह भी

विचित्र वाक्य है बेटा! क्या मानो सूर्य में भी सोम्य है और चन्द्रमा में भी सोम है। मेरे प्यारे! देखो सोम्य का अभिप्राय ये है कि सोम अम्रतम् प्रतहाः वह जो सोम है जो चन्द्रमा से आता नाना प्रकार की किरणों, कान्ति के द्वारा और जो सूर्य से प्रकाश आता है। क्योंकि देखो सोम कहते हैं रस को, सोम कहते हैं बेटा! जो ब्रह्मरन्ध्र के ऊपरले स्थान में पिपाद नामक स्थान है उसमें बहुत सूक्ष्म सा बेटा! एक विरित परमाणु होता है। मेरे प्यारे! देखो विरित नाम का जो व्रतम स्थान है उसमें जब ब्रह्मरन्ध्र में प्राण और मन के प्रभाव से बेटा! जब पंखडियाँ गति करनी प्रारम्भ करती हैं तो मुनिवरो! देखो उन पँखडियों के साथ ही वह जो पिपाद स्थान है बेटा! उसमें से परमाणु आने प्रारम्भ हो जाते हैं। वह परमाणु मानव की रसना के निचले विभाग में एक स्वाधात्रित नामकी नाड़ी है उस स्वाधात्रित नाम की नाड़ी का मानो रसना के अग्र भाग से उसका सम्बन्ध होता है और रसना के जब वे अग्र भाग में मुनिवरो! देखो रस आता है उस रस को योगी पान करता है। अग्नि की पूजा करने वाला जब उसको पान करता है मेरे प्यारे! वो ही रस मानो देखो नाभाविचित्र नाम की एक नाडी है उसमें जाना वो रस प्रारम्भ हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो वह उस स्थली में वह जो नाभि केन्द्र है त्रिकात पीस्तों त्रिकाराम चक्रती जो चक्र कहलाता है उसमें बेटा! वो रस आना प्रारम्भ हो जाता है। मानो वो जो रस है उस रस में मुनिवरों! देखो नाना चितो वस्तो मेरे प्यारे! देखो उस रस को अग्नि भी भस्म नहीं करती। उस मानो आनन्द को, उस मानो सोम को मुनिवरों! देखो अग्नि भी भस्म नहीं कर सकती। उस मानव का जो शरीर है वह वज्र के तुल्य हो जाता है। वो वज्र बनकर के मुनिवरो! देखो वह अपने में स्वादन पान करता रहता है।

जिस ब्रह्मचर्य की गति मानव की ध्रुवा में जानी थी, जिससे मानव पितर याग करता है, मुनिवरो! देखो उन परमाणुओं की गति शनैःशनैः ऊर्ध्वा गति को चली गयी। वह ब्रह्मरन्ध्र से वो ही परमाणु

क्योंकि देखो निचले स्थान में तो बेटा! जब ब्रह्मचर्य की गति, उन परमाणुओं की गति मानो ध्रुवा बन जाती है तो सँसार में पितर याग करता है, सन्तान इत्यादि की उत्पत्ति कर रहा है और जब उन्हीं परमाणुओं की बेटा! ऊर्ध्वा गति बन जाती है तो वो देवता बन जाता है। और कैसा दिव्य बन जाता है मुनिवरो! देखो ये सँसार उसके लिये खिलवाड़ बन जाता है। मेरे पुत्रों! वह अग्नि को ले करके, वह जो परमाणु रूपी अग्नि है उस अग्नि का वो याग कर रहा है कहाँ? वो नाभि केन्द्र में याग कर रहा है, वो ज्ञान के द्वारा याग कर रहा है और याग करता हुआ बेटा! परमाणुओं की ऊर्ध्वा गति बना रहा है और बनाता हुआ मुनिवरो! देखो ब्रह्मरन्ध्र से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होनी प्रारम्भ हो जाती है।

हे मेरे पुत्रों! आज मैं इस विषय को बहुत गम्भीरता में लेता चला जा रहा हूँ परन्तु जब वेद का विषय, वेद का विचार एक ऐसा आ गया तो बेटा! मैं गम्भीर वाक्यों को अवश्य उच्चारण अवश्य कर पाऊँगा। परन्तु देखो इतना मैं इसका कर सकूँगा उतना मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर पुत्र मैं देता रहूँगा और देता रहा हूँ। परन्तु देखो आज का विचार क्या कि वो याग कर रहा है, वो मानव याज्ञिक कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो वो पितर याग भी किसी-किसी काल में कर देता है, उसके पश्चात् भी वो याग कर रहा है।

तीनों अग्नियों का समावेश

मेरे पुत्रों! ऐसा मुझे स्मरण है, ऐसा मुझे दृष्टिपात आता है हे मुनिवरों! क्या जब वह देखो अवधतः गति को प्राप्त होता हुआ वह गार्हपत्य नाम की अग्नि बेटा! उसे दूरी होकर के यहाँ तीनों अग्नियों का समावेश हो जाता है। तीनों अग्नियों का समावेश होता हुआ मुनिवरो! देखो वह सँसार में ही सँसार के एक-एक परमाणु को व्यापिकता में दृष्टिपात कर रहा है। मेरे प्यारे! वो समाधि लगा रहा है। एकन्त विराजमान हो करके सब औषधियों में विराजमान हो गया

तो वहीं समाधिष्ठ हो गया। वहीं ये विचारता रहता है कि ये सँसार क्या है? मानो ये वनस्पतियाँ क्या हैं? ये गुण क्या हैं? इनके गुणों को जानता हुआ वो समाधिस्थ होता हुआ वह मेरे प्यारे! आवहनीय नाम की अग्नि की पूजा कर रहा है। वह मानो देखो दक्षिणाय अग्नि की पूजा कर रहा है। मुनिवरो! देखो अग्नियों की पूजा करता हुआ प्रत्येक वस्तु में, कण-कण में बेटा! वह मानो विज्ञान और प्रसारण दृष्टिपात कर रहा है। और जब प्रसारण दृष्टिपात करता रहता है तो मेरे पुत्रो! देखो वह प्रसारण जब प्रत्येक वस्तु में प्रसारण दृष्टिपात करता है तो मुनिवरो! देखो। उसका आकुँचन भी करने लगता है। और उसको बाहीय जगत में दृष्टिपात करता हुआ वह आन्तरिक जगत में जाता है, अपने मनों के प्राण के जगत में जाता है। मुनिवरो! देखो उसे अपने अन्तरात्मा में सर्वत्र जगत दृष्टिपात आ रहा था। जब वह आता चला जा रहा था तो मुनिवरो! देखो ऐसे प्राणी का सँसार में ऐसा जो याज्ञिक पुरूष होता है, ऐसा जो समिधा के द्वारा मानो देखो जो साकल्य के द्वारा नाना प्रकार की वनस्पतियों को निगल रहा है, हव्य पर्दार्थों को हव्य बना करके वह पदार्थ बना करके पान कर रहा है। मुनिवरो! देखो देवताओं को प्रसारण कर रहा है, स्वयँ देवता बन रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो जब वह स्वयँ देवता बन रहा हैं तो उस मानव का तो बेटा! सँसार में कोई भी शत्रु नहीं रहता। वह जो ऐसा याज्ञिक पुरूष है बेटा! उसका कौन शत्रु बनेगा? क्योंकि जब उसका अन्तरात्मा उसका शत्रु नहीं रहा। वह मन भी जब प्राण में उन्होंने समावेश कर दिया और प्राण अप्रव्हे व्रताहा। प्राण मुनिवरो! देखो गति कर रहा है, एक-एक वनस्पति में गति कर रहा है। वह पृथ्वी के गर्भ में जाता है तो वहाँ भी याग रूप स्वीकार करता है। वहाँ मुनिवरो! देखो जब गर्भ में पृथ्वी के जाता है नाना प्रकार के खनिजों को जानता है।

ब्रह्मचारी सुकेता जब भारद्वाज मुनि आश्रम में बेटा! वह भगवान् राम के सहित अहिल्या के गर्भ में प्रवेश करने लगे, अहिल्या के गर्भ

में बेटा! जब वो प्रवेश करने लगे तो अहिल्या के गर्भ में नाना प्रकार का खनिज दृष्टिपात आ रहा था। नाना खनिज दृष्टिपात आता हुआ उसमें बेटा! देखो दस-दस योजन के निचले स्थलों की कौन सी दूरी पर, कितनी दूरी पर कौन सा खनिज विराजमान है, कौन सा खाद्य विराजमान है मानो देखो कितने प्रकार का जल प्रवाह कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखो वो वैज्ञानिक बनता हुआ वह इस पृथ्वी के आन्तरिक और बाहीय जगत को जानता रहता है। उस विद्या को कोई अग्नि का प्रवेश मानो **ये अग्नि ही तो है बेटा! जो मानो पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार की वनस्पतियों को तपा रहा है, नाना खनिजों को तपा रहा है।** वो अग्नि ही तो है परन्तु अग्नि कहीं जल के परमाणुओं को ले करके तप रही है। मानो देखो जब ब्रह्मचारी ये अनुसन्धान करता है, अनुसन्धान करता हुआ मानो देखो ऊर्ध्वा उड़ान उड़ना प्रारम्भ करता है—सूर्य के गर्भ में क्या है, कौन से किस प्रकार के प्राणी रहते हैं। मुनिवरो! चन्द्रमा के चन्द्र लोक में क्या है, मंगल लोक में क्या है, मुनिवरों! देखो सर्वत्र लोक लोकान्तरों की गति प्रारम्भ करने लगता है।

आन्तरिक जगत

परन्तु देखो जब एक आकाश गंगा में जाता, एक आकाश गंगा के सूर्यों की गणना करता है तो **बेटा! वो अनुभव से गणना कर रहा है।** वह जो मानो देखो दो नाड़ियों का मैंने वर्णन कराया है वो समाधि के द्वारा बेटा! समाधिस्थ हो करके अपने मन और प्राण की प्रवृत्ति को बेटा! वो अन्तरिक्ष में त्याग देता है। अन्तरिक्ष में से मानो उसे अनुभव हो रहा है एक आकाश गंगा में कितने लोक हैं, एक आकाश गंगा में कितने सूर्य हैं। एक आकाश गंगा में कितने बृहस्पति हैं मानो जब वो एक आकाश गंगा को जानता है तो द्वितीय में चला जाता है। जब बेटा! एक-एक ऋषि, ब्रह्मचारी सुकेता जैसा ब्रह्मचारी मुनिवरो! जब एक-एक मानव समाधिस्थ होता हुआ वह मुनिवरो!

देखो बहत्तर-बहत्तर आकाश गंगा के सूर्यों की गणना करता तो वह कहता है कि मैं इसकी गणना नहीं कर सकता, अनुभव कर सकता हूँ। मेरे प्यारे! देखो एक आकाश गंगा के जब अरबों खरबों सूर्यों की गणना करने लगता है, द्वितीयों को इसी प्रकार गणना करने लगता है, नाना स्वाति नक्षत्रों को दृ टपात करने लगता है। मेरे पुत्रो! वह अपने में ही मानो इसको सँसार को जब व्यापकता में ले जाता है प्रसारणवाद में ले जाता हैं, इसी को आकुँचन करता है। इसी को आकुँचन करके बेटा! इसको समेट करके अपने आन्तरिक जगत में बेटा! वो दृ टपात करने लगता है। जब आन्तरिक जगत में दृष्टिपात करता है तो मेरे प्यारे! आन्तरिक जगत का जो ये परमाणुवाद है इसका जो निर्माण है मानो देखो एक-एक कण-कण में दृष्टिपात आता है एक-एक शब्द शब्द में मुनिवरो! देखो उसके चित्र उसे दृष्टिपात आने लगते हैं।

अनेक प्रकार की अग्नि

मेरे प्यारे! वेद का ऋषि तो यह कहता है चित्रम् ब्रह्मे क्रतव स्ताहा। वेद का ऋषि तो ये कहता है कि एक-एक शब्द में, एक-एक श्वास में, एक-एक प्राण की गति में मानव के चित्र के चित्र अन्तरिक्ष में विराजमान रहते हैं। तो मेरे प्यारे! उनका जो वाहन है वह अग्नि है। एक अग्नि तो यह है जो साकारवत में है। एक अग्नि वह कहलाती जिसके ऊपर यह शब्द विराजमान हो करके आवहनीय नाम की अग्नि कहलाती है, दक्षिणाय अग्नि कहलाती है, नचिकेत नाम की अग्नि कहलाती है, सोमभान पवित नाम की अग्नि कहलाती है, कृतिभा नामक अग्नि कहलाती है। इन्द्र नाम की अग्नि कहलाती है, सोम कृतिभा अग्नि कहलाती है, चक्राणी अग्नि कहलाती है, श्वेताम नाम की अग्नि कहलाती है, कृतिभा नामक अग्नि कहलाती है। बेटा! नाना प्रकार की अग्नियों से वो अपने चित्रों को दृष्टिपात करने लगता है तो मेरे प्यारे! भौतिक विज्ञान उसके समीप भी नहीं जाता। भौतिक विज्ञान बेटा! उन चित्रों को नहीं जान सकता जिन चित्रों को एक योगेश्वर जानता है। एक मानव देखो इन अग्नियों की पूजा करने वाला जानता है।

वेद का ऋषि ये कहता है क्या एक ही प्रकार की अग्नि नहीं है संसार में, तीन ही प्रकार की अग्नि नहीं है सँसार में, सँसार में सहस्त्र प्रकार को अग्नि नहीं है—वेद का ऋषि तो ये कहता है क्या अग्नियों की धारा को मानव गणित करता-करता मानो देखो समय के समय व्यतीत हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो वेद के ऋषि से जब ये प्रश्न किया गया क्या महाराज अग्नि कितने प्रकार की है? तो ऋषि कहता है एक अग्नि वह है जो मानव के चित्रों को ले जाती है, एक अग्नि वह है जो मानो अन्तरिक्ष में उन चित्रों को स्थिर कर देती है, एक अग्नि वह कहलाती है जो मानो देखो वहाँ से यहाँ तक आने के लिये आती है, एक अग्नि वह होती है जिसको वैज्ञानिक अथवा योगी अपने में अनुभव करता हुआ उस अग्नि को अपने में सींचने लगता है। एक अग्नि वह होती है जो मानो देखो सींच करके एक-एक कणों को ले करके प्राण को प्राण के द्वारा मानो देखो प्राणत्व अग्नेप्रवेह। वेद का ऋषि कहता है बेटा! क्या यह जो प्राण है अन्तिम मानो देखो सर्वत्र अग्नि और प्रकाश का जो स्वरूप है वह **अग्नित्व वह प्राणत्व माना गया है।**

मेरे प्यारे! उसके ऊपर **मानव के शब्द और चित्रावली** एक-एक कण-कण मुनिवरो! देखो गति कर रहा है। मैं कैसे विचित्र वाक्य प्रगट कर रहा हूँ पुत्रो! मानव जो श्वास लेता है तो श्वास के साथ में उस मानव का वैसा ही आकार मुनिवरो! अन्तरिक्ष में चला जाता है। वो आकार मेरे प्यारे! उसमें लगभग देखो दो खरब के लगभग परमाणु होते हैं और उनमें एक-एक परमाणु के साथ-साथ में मानो देखो करोड़ों-करोड़ों परमाणु होते हैं जो उस एक-एक परमाणु की परिक्रमा करते हैं और कैसा विचित्र प्रभु का निर्माण है, जगत है। मानो जब मानव का चित्र जाता है जैसा मानव का आकार है, उसी आकार में उसी मानो क्षेत्र में वो परमाणु रहते हैं और उतना ही आकार का चित्र बेटा! अन्तरिक्ष में गति करने लगता है। तो मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें इस क्षेत्र में ले जाना नहीं चाहता हूँ।

विचार विनिमय ये बेटा! ये बहुत मधु विद्या है, यज्ञमय विद्या है, ये मानो देखो प्रहे विद्या है मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन करते ये कहा है क्या यहाँ सहस्त्रों प्रकार की अग्नियों की धारा हैं जिनको जाना जाता है। जैसे आवहनीय अग्नि है, आवहनीय अग्नि को जानते रहो तो बेटा! एक-एक धारा एक-एक अग्नि में से अरबों खरबों धाराओं का जन्म होता है और उन धाराओं को गार्हपत्य अग्नि की पूजा कहते हैं जो उस अग्नि को जानते हैं उसमें से अरबों खरबों तरङ्गें उत्पन्न हो जाती हैं। दक्षिणाय अग्नि को विचारने लगते हैं उसमें नाना तरङ्गें आ जाती हैं उसका अपना जो मौलिक स्वरूप है वो समापन को प्राप्त हो जाता है।

परिणाम क्या? मेरे प्यारे! देखो जो मानव इस विज्ञान को जानता है क्या परमाणु परमाणु मानो देखो **कोई वस्तु नष्ट नहीं होती।** तो मेरे प्यारे! उस मानव का सँसार में शत्रु भी कौन रहता है। ये शत्रु तो बेटा! अज्ञानता में रहता है। जब तक मानव ये स्वीकार करता है क्या मेरा ये अभिमान अप्रबे शरीर है इससे मोह ममता में लगा रहता है इस मोह ममता को मानो देखो उसको अपने क्षेत्र में रहने दिया जायेगा तो मेरे प्यारे! मृत्यु नहीं होती। क्योंकि मृत्यु तो अज्ञान को कहते हैं और जब अज्ञान नहीं रहेगा।

मेरे प्यारे! जब मानव **विज्ञान की तीन पँचम धाराओं** को जान लेता है। देखो प्रसारण, देखो व्यापिकवाद, मुनिवरो! देखो उसको हम प्रसारण कहते हैं ध्रुवा और ऊर्ध्वा और मेरे प्यारे! देखो गति करना, मुनिवरों! आकुँचन ये पांचों प्रकार की धाराओं को जो जान लेता है अथवा जो अपने में समाहित कर लेता है। मुनिवरो! देखो अपने जीवन को व्यापक बनाना ध्रुवा बनाना ऊर्ध्वा बनाना मानो देखो ध्रुवा से ऊर्ध्वा में जाना और मुनिवरो! आकुँचन करना सँसार को जान करके उसको अपने में समावेश करना मेरे प्यारे! देखो उसके पश्चात् गति करना मुनिवरो! जब जो इन क्रियाओं को जान लेता है मेरे प्यारे! उसकी सँसार में मृत्यु क्यों आ जायेगी? क्या मृत्यु क्यों आती है?

मृत्यु कहते किसे हैं? अरे! शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु नहीं कहते पुत्रों! मैंने तुम्हें कई काल में निर्णय कहा है अरे मृत्यु तो उनकी होती है जिनकी सँसार मानो अपकीर्ति होती है। अरे! मृत्यु तो अज्ञानी की होती है। अरे! **ज्ञानी की सँसार में मृत्यु नहीं होती** वो तो सूर्य लोकों को प्राप्त रहते हैं सदैव। वे तो सदैव प्रकाश में रहते हैं।

चरि की रक्षा

एक-एक श्वास के साथ में अग्नितत्त्व भ्रमण कर रहा है मानो अमृत बह रहा है। मुनिवरो! देखों हम उस विद्या को और जो इस विद्या को जानता है उसका ब्रह्मचर्य, वह जो चरि है वो सुरक्षित रहती है। अरे! सँसार का प्राणी आ करके बेटा! उसको शस्त्रों से भी छेदन्य नहीं कर सकता। मेरे प्यारे! जब चरि की रक्षा होती है—आज जो मानव चरि की रक्षा ही नहीं कर पाते अरे जो चरि को ही नहीं जान पाते। मेरे पुत्रो! चरि की रक्षा कैसे होती हैं सुनो, श्रवण करो। एक समय मेरे पूज्यपाद गुरूदेव के द्वारा जब साधक बनने के लिये पहुँचे तो ये कहा गया क्या पच्चासी-पच्चासी वर्षों तक मौन रहकर अपने जीवन को व्यतीत करो। अरे! पच्चासी वर्षों तक मौन रहकर के वाणी के तप को तपा जाता है। मानो एक मानव चाहता है मैं नेत्रों का तप करना चाहता हूँ वह मुनिवरो! देखो नेत्रों से सदैव मौन रह करके नेत्रों से प्रभु की महिमा को ही दृष्टिपात कर रहा है। मुनिवरो! देखो श्रोत्रों से अशुद्ध वाक्य श्रवण नहीं कर रहा है। वह श्रोत्रों में सदैव महान और दर्शनों के शब्दों को, विज्ञान के शब्दों को श्रवण कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखों घ्राण के द्वारा सदैव सुगन्धि सुगन्धि लेता रहता है। मुनिवरो! वाणी के द्वारा सदैव सत्य ही सत्य उच्चारण करता रहता है। सत्य ही दृष्टिपात करना, सत्य ही सुगन्धि लेना, सत्य ही श्रवण करना, सत्य ही उच्चारण करना, सत्य को ही स्पर्श करना। मेरे प्यारे! जब सत्य ही सत्य जीवन में आ जाता है, अरे! **सत्य में ईश्वर है,** सत्य में ही मानो देखों वज्र बनना है। मुनिवरों! देखो जब प्रत्येक इन्द्री में सत्य ही सत्य आ जाता है मेरे प्यारे! और ब्रह्मचर्य बेटा!

किसी भी इन्द्री से मानो देखो शान्त नहीं हो पाता। मेरे पुत्रो! देखो वो कैसा जीवन है? अरे! उस मानव के जीवन में तो अमृत भरण हो जायेगा। सोम से अमृत लेता है वो मानो चन्द्रमा से अमृत नहीं लेता। वेद का ऋषि तो यह कहता है लोकप् प्रव्हे अस्सुताम् मिताहाः। वेद का ऋषि तो ये कहता है अरे नाना लोक ोकान्तरों से अमृत को लेता रहता है जैसे एक प्राणी सँसार में मुनिवरो! देखो वह सदैव दूसरे के गुणों को श्रवण करता रहता है अवगुणों को छूता भी नहीं है। एक समय उस प्राणी का वो दिवस आता है क्या उसके अवगुण वाले प्राणी भी उसकी पूजा करना प्रारम्भ कर देते हैं।

हे मेरे पुत्रो! आज हमें विचारना है कि हम उस क्षेत्र में पहुँचे, हम उस विद्या को जाने परन्तु बिना तप के, **बिना मानो देखो अनुभव के ये विद्या नहीं जानी जाती ये बहुत गम्भीर विषय है।**

मोक्ष का द्वार

आज जो बेटा! तुम मेरे से प्रश्न कर रहे हो इस विद्या ने तुम्हारे जीवन को महान बनाया। मानव देखो जीवन मुक्त बन जाता है, प्राणी वो ऐसा बन जाता है मानो अन्तरिक्ष के परमाणुओं को जानता हुआ प्राणी मेरे प्यारे! देखो वो उन परमाणुओं को एकत्रित करके उन चित्रों में प्रवेश कर जाता है जो चित्र उसके अन्तरिक्ष में गति कर रहे हैं। मानो उन चित्रों को ले करके वह किसी मृतक प्राणी के उनके शरीरों में प्रवेश करके मानो देखों उससे वो जीवित बन जाता है। मानो वो शरीरों को प्राप्त होता रहता है। अरे स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों को जान करके बेटा! वो मोक्ष को प्राप्त हो जाता है। ये अग्नि की पूजा का मैंने कुछ सूक्ष्म सा तुम्हें स्वरूप उच्चारण किया। ये कल मानो देखो इससे पूर्व शब्दों में मैंने कुछ चर्चाएँ की थीं आज भी मानो उसका शेष भाग मैंने तुम्हें प्रगट कराया और वो भाग क्या था? मानो देखो मैं ये उच्चारण कर रहा था कि याज्ञिक जो पुरूष है उसका सँसार में कोई शत्रु नहीं होता और वो मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

मुनिवरो! देखो उदान प्राण को जानता हुआ देखो प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान ये सब प्राणों को नाग, देवदत्त, धन्नजय, कुरू, कृकल इन दसों प्राणों को एक सूत्र में ला करके और मन की इसमें पुट लगा करके मानो जब ये एक सूत्र में हो करके दोनों गति करते हैं। **आत्म चेतना जो ज्ञानमय है** परन्तु इनके ऊपर विश्राम करता हुआ जब मुनिवरो! देखो नासिका के द्वारा, प्राण के द्वारा ये गमन करता हैं और मन से गुथा हुआ है, कामना से गुथा हुआ है तो सँसार के गर्भ को, पृथ्वी के गर्भ को भी जानता है क्योंकि देखो इस पृथ्वी में भी मन और प्राण ही विभाजन कर रहे हैं। बाहरीय जगत में जो लोक लोकान्तर विभक्त होते दृष्टिपात आते हैं ये भी मानो देखों मन और प्राण की अव्यक्त प्रतिक्रिया है। परन्तु देखो जब उस क्रिया को तुम मानवीय शरीर में जान लोगे तो बाहरीय जगत भी तुम्हारे समीप आ जायेगा और बाहीय और आन्तरिक जगत दोनो का मिलान करना मानो देखो गार्हपत्य नाम की अग्नि की पूजा है, आवहनीय नाम की अग्नि की पूजा है और दक्षिणाय अग्नि की पूजा है। इन अग्नियों की पूजा करने वाला इनमें जो तरङ्गे उत्पन्न होती हैं उनको जानता हुआ जिन तरंगों में ये सूक्ष्म शरीर मानो उदान प्राण के साथ में गति करता है। देखो, उसमें अग्नियों को जानने वाला बेटा! उनको जान लेता है और जान करके जब उनको जान करके देखो सूक्ष्म शरीर को त्याग करके जब कारण लिंग में ये आत्मा प्रवेश करता हैं मानो देखो वह ईश्वर का एक मोक्ष का द्वार कहलाता है—मन और प्राण को दोनों को एक सूत्र में लाना। इनका विभाजन करना सँसार है, इनको एक सूत्र में लाना। एकता को अनेकता में प्रवेश कर अनेकता को एकता में प्रवेश करके बेटा! परमात्मा के द्वार पर जाना उसको मोक्ष कहा जाता हैं।

ज्ञानरूपी अग्नि

आज का हमारा यह वाक्य क्या कह रहा है। हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुण गान गाते हुए हम इस सँसार से पार हो जाएँ। क्योंकि पार होना हमारा कर्त्तव्य है।

हमारे ऋषि-मुनि इस पवित्र विद्या का परम्परा से अध्ययन करते रहे हैं। याज्ञिक पुरुष याग करते रहे हैं। आज जो मानव यजमान बन करके अपने आहार और व्यवहार को शोधन नहीं कर पाता और वह मोक्ष और सन्तान की कल्पना करना चाहता है यह उसका मानवीय विज्ञान के ऊपर भी मानो भयँकर आक्रमण हो रहा है या आक्रमण किया जा रहा है। आज वो चाहता है कि मैं याग से मोक्ष को प्राप्त हो जाऊँ ये कदापि नहीं हो सकता। परन्तु याग से मोक्ष उस काल में प्राप्त होता है जैसे हम आहुति देकर के हम भस्म कर रहे हैं क्या देखो साकल्य स्थूलता को भस्म करके हम उसका सूक्ष्म रूप बना करके शोधन कर रहे हैं अन्तरिक्ष का शोधन कर रहे हैं इसी प्रकार मानो ज्ञान रूपी जैसे उससे शिक्षा ले करके हम आन्तरिक जगत में भी मानो देखो जब हम उसको स्थूल को हम सूक्ष्मता में ले जाते हैं। स्थूल क्या है? नाना प्रकार के जो अवगुण हैं हमारा आहार और व्यवहार जो अशुद्ध हो गया है स्थूल बन गया है। वह पाप का मूल जो बन गया हैं आज उनको हम मानो अग्नि के द्वारा, ज्ञान रूपी अग्नि के द्वारा जैसे इस अग्नि के द्वारा, भौतिक अग्नि के द्वारा मानो ये अज्ञान और साकल्य समाप्त होता है और उसका सूक्ष्म स्वरूप बन जाता है इसी प्रकार हे यजमान तेरा आहार और व्यवहार मानो देखो दोनों ही अग्नि में, जब तक ज्ञान रूपी अग्नि में भस्म नहीं हो जाते तब तक मानो देखो तेरा कल्याण नहीं होता और जो मानव यज्ञ भी करता रहे, अग्नि को भी साक्षी करता रहे, प्रतिज्ञा भी करता रहे, संकल्प भी करता रहे और मानो संकल्प उसके नष्ट भी होते रहें वो मानव मोक्ष की कल्पना करे तो ये मानों देखों एक प्रकार का अशुद्ध व्यवहार है। ये मानो धर्म के ऊपर एक आक्रमण हो रहा है। ये परमात्मा की अमूल्य विद्या के ऊपर, वेद की विद्या के ऊपर आक्रमण होता चला जा रहा है।

संकल्पवादी बनने की प्रेरणा

हे मानव देखो मानो जो संकल्प क्योंकि परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में ये जगत रूपी सँकल्प किया था इतने समय पर

सूर्य उदय होगा वो सूर्य क्या-क्या कार्य करेगा, चन्द्रमा इतने समय पर उदय होगा मानो अपना कार्य करता रहेगा। अरे! यदि परमात्मा का संकल्प अशुद्ध हो जाये तो ये संसार, संसार नहीं रहेगा। इसी प्रकार मानव का संकल्प है मानव जब संकल्प करता है महानता का—मानो यदि उसका संकल्प नष्ट हो जाये तो उसके जीवन में क्रान्तियाँ आ जाती हैं, उसके बाहीय जगत में भी अशुद्ध क्रान्तियाँ आ जाती हैं, मानो वो व्याकुल होता रहता है उसको मानो वह जो देवता जिनके द्वारा उसने संकल्प किया वो देवता मानो रूद्र बन करके उस प्राणी को रूलाते रहते हैं। अशुद्धियों के द्वारा रूलाते हैं। पति पत्नी का संस्कार होता है उसी संकल्प के द्वारा जीवन व्यतीत होता यदि दोनों का संकल्प समाप्त हो जाये तो जीवन में एक अशुद्ध क्रान्तियाँ आ जाती हैं, गृह अस्त व्यस्त हो जाते हैं। ऐसे परमात्मा का और मानव के जगत दोनों का समावेश करते हुए संकल्पवादी बनो, जीवन को ऊँचा बनाने का प्रयास करो। ये है आज का हमारा वाक्य। अब समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा आज का वाक्य ये समाप्त होने जा रहा है।

ओ३म् ब्रह्म भू रेवम् भगा महानम् आभ्याम् गतामनु आपारहेणाम् गतामनाः।
ओ३म् ब्रह्मणाः देवम् मया सर्वव भद्राः।।

पूज्य महर्षि महानन्द जी — अच्छा भगवन्!

पूज्यपाद-गुरुदेव — आनन्दित रहो!

दिनांक : 3 मार्च, 1976

समय : दोपहर 3 बजे

स्थान : यज्ञमण्डप लाक्षागृह, बरनावा

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. संसार की सारी विद्याओं का, ज्ञान विज्ञान का, लोक लोकान्तरों का और सारे पदार्थ का आपस में गहरा सम्बन्ध है।
2. पदार्थों का संयोग और वियोग होता रहता है।
3. इन्द्रियों का विच्छेद जब इस शरीर से होता है तो इनमें एक शोकार्त भाव स्वाभाविक उत्पन्न हुआ करता है।
4. विचारों का संकल्प का विच्छेद होने पर शोक होता है।
5. माता के गर्भ में मन तथा प्राण के साथ ही जीव आता है।
6. मानव के मस्तिष्क (अन्तःकरण) में प्रत्यक्ष वस्तुओं का स्वरूप तथा विचारों का संग्रह हो जाता है, वही स्वप्न में दिखता है और अदृश्य हो जाता है।
7. आत्मा के प्रयाण करने पर मन, प्राण तथा इन्द्रियां चली जाती है यही मृत्यु है।
8. सबसे प्रथम इस शरीर से आत्मा जाता है। उसके पश्चात् मन और प्राण जाता है मन और प्राण के साथ में ये नाना प्रकार की इन्द्रियां चली जाती हैं।
9. जिस द्वार से आत्मा का परिवार जाता है। वैसे ही लोकों को रमण करने वाला बन जाता है।
10. यदि नेत्रों के द्वारा चला गया है तो मनुष्य उर्ध्व लोकों में प्राप्त हो जाता है।
11. जिसकी आत्मा मुखारबिन्द के द्वारा जाता है। तो वह आश्वानी लोकों में प्राप्त हो जाता है।
12. जो आत्मा ब्रह्मरन्ध्र से जाता है, घ्राण के द्वारा जाता है। देव लोक में प्राप्त हो जाता है।
13. जब ब्रह्मरन्ध्र से यह आत्मा जाता है तो द्यु लोक को देवताओं के लोकों को प्राप्त हो जाता है। वह मोक्ष वाली आत्माओं को प्राप्त होने वाला आत्मा होता है।
14. जो आत्मा उपस्थ के द्वारा जाता है, वह कीट पतंगों की योनि को प्राप्त होता है।
15. जो आत्मा ग्रीवा के द्वारा जाता है वह भी 'ग्रीवा अम्बर' गन्द में जाने वाला जीव कहलाया गया है।
16. शब्द के द्वारा जाने वाला आत्मा द्यु-लोक और अन्तरिक्ष लोक में आत्माओं के समाज के साथ विराजमान हो जाता है।
17. सब लोकों, योनियों एवं गतियों का रचियता ब्रह्म ही है। ब्रह्म ही निर्णय देता है ब्रह्म ही नियुक्त करता है।

प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

श्री रामकृष्ण शर्मा जी के निर्देशन में प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन 18 जून, 2017 से 25 जून, 2017 तक प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, बरनावा के प्रांगण में निःशुल्क जन कल्याण के लिये आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सभी सम्मिलित होकर लाभ प्राप्त करने के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गंगा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 100 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ- साथ निम्न किसी भी एक पते पर डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं—

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   ए-59, पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	60.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	50.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
70.	ईश्वर मिलन	50.00
71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00
72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	80.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यों को 'यौगिक प्रवचन' पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में अपने पोस्ट मैन से एक सप्ताह के समय में जानकारी करें और फिर भी न मिलने की स्थिति में अपने सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस में इस विषय में लिखित एक प्रार्थना-पत्र पोस्ट मास्टर साहब को दें जिससे कि पत्रिका न मिलने की खोज-बीन डाक विभाग द्वारा कराके आपकी पत्रिका आपको समय पर मिलनी प्रारम्भ हो जाए। कृपया प्रार्थना-पत्र की एक प्रति पर डाक विभाग द्वारा प्राप्ति के हस्ताक्षर व मोहर लगवाकर हमें भी भेज देवें जिससे कि इस विषय में यहाँ भी डाक विभाग को अवगत करा दिया जाए।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हम अपने जीवन को यज्ञमय बनायें, हमारा जीवन परमात्मा ने रचा है। वह दान, त्याग और तपस्या द्वारा यज्ञकर्म करने के लिए रचा है। अन्यथा उसके रचने का कोई उद्देश्य नहीं है। जितने शुभ कर्म मानव शरीर से किये जाते हैं वे और शरीरों से नहीं किये जाते। जब नहीं किये जाते तो जो भी धर्म करता है वह सब यज्ञकर्म कहलाता है। परमात्मा का चिन्तन हृदय से करो, तो हृदय पवित्र हो जायेगा। आज तुम परमात्मा का चिन्तन कर रहे हो।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 45 : अंक : 537
जून 2017

मूल्यः
दस रुपये

POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-6-2017
Published on 5th day of the same month